न्यारापन ४

१

अपने को चेक करो हर कर्म में साधारणता में महानता अनुभव होती है? जब स्वयं, स्वयं को ऐसे अनुभव करेंगे तब दूसरों को भी अनु-भव करायेंगे। जैसे और लोग कार्य करते हैं ऐसे ही आप भी लौकिक कार्य व्यवहार ही करते हो वा अलौकिक अल्लहा लोग होकर कार्य करते हो? चलते फिरते सभी के सम्पर्क में आते यह जरूर अनुभव कराओ जो समझें कि इन्हों की दृष्टि में, चेहरे में न्यारा पन है। और देखते हुए स्पष्ट समझ में न भी आये लेकिन यह क्वेश्चन जरूर उठे कि यह क्या है? यह कौन है? यह क्वेश्चन रूपी तीर बाप के समीप ले ही आयेगा। समझा।

२

अव्यक्त अर्थात् व्यक्त भाव से न्यारे और अव्यक्त बाप समान प्यारे।

३

जितना हिम्मतवान बनते हैं उतना पद्मगुणा बाप की मदद के स्वत: ही पात्र बन जाते हैं। ऐसे पात्र बच्चों की निशानी क्या होती है? जैसे बाप के लिए गायन है कि बाप के भण्डारे सदा भरपूर हैं, ऐसे सपूत बच्चों के सदा सर्व के दिल के स्नेह की दुआओं से, सर्व के सहयोग की अनुभूतियों से, सर्व खजानों से भण्डारे भरपूर रहते हैं। किसी भी खजाने से अपने को खाली नहीं अनुभव करेंगे। सदा उन्हों के दिल से यह गीत स्वत: बजता है–अप्राप्त नहीं कोई वस्तु बाप के हम बच्चों के भण्डारे में। उनकी दृष्टि से, वृत्ति से, वायब्रेशन्स से, मुख से, सम्पर्क से सदा भरपूर आत्माओं का अनुभव होता है। ऐसे बच्चे सदा बाप के साथ भी हैं और साथी भी हैं। यह डबल अनुभव हो। स्व की लगन में सदा साथ का अनुभव करते और सेवा में सदा साथी स्थिति का अनुभव करते। यह दोनों अनुभव 'साथी' और 'साथ' का स्वत: ही बाप समान साक्षी अर्थात् न्यारा और प्यारा बना देता है। जैसे ब्रह्मा बाप को देखा कि बाप

और आप कम्बाइन्ड-रूप में सदा अनुभव किया और कराया। कम्बाइन्ड स्वरूप को कोई अलग कर नहीं सकता। ऐसे सपूत बच्चे सदा अपने को कम्बाइन्ड-रूप अनुभव करते हैं। कोई ताकत नहीं जो अलग कर सके।

४

स्वयं को अशरीरी आत्मा अनुभव करते हो? इस शरीर द्वारा जो चाहैं वही कर्म कराने वाली तुम शक्तिशाली आत्मा हो – ऐसा अनुभव करते हो? इस शरीर के मालिक कर्मेन्द्रियों द्वारा कर्म कराने वाले, इन कर्मेन्द्रियों से जब चाहो तब न्यारे स्वरूप की स्थिति में स्थित हो सकते हो? अर्थात् राजयोग की सिद्धि – कर्मेन्द्रियों के राजा बनने की शक्ति प्राप्त की है? राजा व मालिक कभी भी कोई कर्मेन्द्रिय के वशीभूत नहीं हो सकता। वशीभूत होने वाले को मालिक नहीं कहा जाता। विश्व के मालिक की सन्तान होने के नाते, जब बाप विश्व का मालिक हो और बच्चे अपनी कर्मेन्द्रियों के मालिक न हों, तो क्या कहैंगे? मालिक के बालक कहैंगे? नाम हो मास्टर सर्वशक्तिवान् और स्वयं को मालिक समझ कर चल नहीं सके तो क्या मास्टर सर्वशक्तिवान् हुए? हम मास्टर सर्व-

शक्तिवान् हैं – यह तो पक्का निश्चय है ना, कि यह निश्चय भी अभी हो रहा है? निश्चय में कभी परसेन्टेज होती है क्या? बाप के बच्चे तो हैं ही ना? ऐसे थोड़े ही ९०हैं और १० नहीं है। ऐसा बच्चा कभी देखा है? निश्चय अर्थात् १०० निश्चय।

५

सदा अपने को हर कदम में साक्षी और सदा बाप के साथी – ऐसे अनुभव करते हो? जो सदा साक्षी होगा वह सदा ही कर्म करते हर कदम उठाते कर्म के बन्धन से न्यारे और बाप के प्यारे तो ऐसे साक्षीपन अनुभव करते हो? कोई भी कर्मेन्द्रियाँ अपने बन्धन में नहीं बाँधे इसको कहा जाता है साक्षी। ऐसे साक्षी हो? कोई भी कर्म अपने बन्धन में बाँधता है तो उसको साक्षी नहीं कहेंगे। फँसने वाला कहेंगे। न्यारा नहीं कहेंगे। कभी ऑख भी धोखा न दे। शारीरिक सम्बन्ध में आना अर्थात् ऑख का धोखा खाना। तो कोई भी कर्मेन्द्रिय धोखा न दे। साक्षी रहें और सदा बाप के साथी रहें। हर बात में बाप याद आवे। महान आत्मायें भी नहीं, निमित्त आत्मायें भी नहीं लेकिन बाबा ही याद आये। कोई भी बात आती है तो पहले बाप याद आता या निमित्त आत्मायें याद आती? सदा एक बाप

दूसरा न कोई, आत्मायें सहयोगी हैं लेकिन साथी नहीं है, साथी तो बाप है। सहयोगी को अपना साथी समझना यह रांग है। तो सदा सेवा के साथी लेकिन सेवा में साथी बाप है। निमित्त सहयोग देते हैं ऐसा सदा स्मृति स्वरूप हो! किसी देहधारी को साथी बनाया तो उड़ती कला का अनुभव नहीं हो सकता। इसलिए हर बात में बाबा बाबा याद रहे।

६

आज बापदादा अपने सर्व बच्चों में से विशेष दो प्रकार के बच्चे देख रहे हैं। एक हैं सदा योगयुक्त और हर कर्म में युक्तियुक्त। दूसरे योगी हैं लेकिन सदा योगयुक्त नहीं हैं और सदा हर कर्म में स्वत: युक्तियुक्त नहीं। मन्सा वा बोल, कर्म - तीनों में से कभी किसमें, कभी किसमें युक्तियुक्त नहीं। वैसे ब्राह्मण-जीवन अर्थात् स्वत: योगयुक्त और सदा युक्तियुक्त। ब्राह्मण-जीवन की अलौकिकता वा विशेषता वा न्यारा और प्यारापन यही है - ''योगयुक्त'' और ''युक्तियुक्त''। लेकिन कोई बच्चे इस विशेषता में सहज और नैचुरल चल रहे हैं और कोई अटेन्शन भी

रखते हैं, फिर भी सदा दोनों बातों का अनुभव नहीं कर सकते। इसका कारण क्या?

नॉलेज तो सभी को है और लक्ष्य भी सभी का एक यही है। फिर भी कोई लक्ष्य के आधार से इन दोनों लक्ष्य अर्थात् योग- युक्त और युक्तियुक्त स्थिति की अनुभूति के समीप हैं और कोई कभी फास्ट पुरुषार्थ से समीप आते लेकिन कभी समीप और कभी चलते-चलते कोई न कोई कारणवश रुक जाते हैं। इसलिए सदा लक्षण के समीप अनुभूति नहीं करते।

सर्व ब्राह्मण आत्माओं में से इस श्रेष्ठ लक्ष्य तक नंबरवन समीप कौन? ब्रह्मा बाप। क्या विधि अपनाई जो इस सिद्धि को प्राप्त किया? सदा योगयुक्त रहने की सरल विधि है - सदा अपने को ''सारथी'' और ''साक्षी'' समझ चलना। आप सभी श्रेष्ठ आत्माएं इस रथ के सारथी हो। रथ को चलाने वाली आत्मा सारथी हो। यह स्मृति स्वत: ही इस रथ अथवा देह से न्यारा बना देती है, किसी भी प्रकार के देहभान से न्यारा बना देती है। देहभान नहीं तो सहज योगयुक्त बन जाते और हर कर्म में योगयुक्त, युक्तियुक्त स्वत: ही हो जाते हैं। स्वयं को सारथी समझने से सर्व कर्मेन्द्रियाँ अपने

कंट्रोल में रहती हैं अर्थात् सर्व कर्मे न्द्रियों को सदा लक्ष्य और लक्षण की मंजिल के समीप लाने की कंट्रोलिंग पावर आ जाती है। स्वयं ''सारथी'' किसी भी कर्मेन्द्रिय के वश नहीं हो सकता। क्योंकि माया जब किसी के ऊपर भी वार करती है तो माया के वार करने की विधि यही होती है कि कोई-न-कोई स्थूल कर्मेन्द्रियों अथवा सूक्ष्म शक्तियां - ''मन-बुद्धि-संस्कार'' के परवश बना देती है। आप सारथी आत्माओं को जो महामंत्र, वशीकरण मंत्र बाप से आपको मिला हुआ है उसको परिवर्तन कर वशीकरण के बजाय वशीभूत बना देती है। और एक बात में भी वशीभूत हुए तो सभी भूत प्रवेश हो जाते हैं। क्योंकि इन भूतों की भी आपस में बहुत युनिटी है। एक भूत आया अर्थात् सभी को आह्वान करेगा। फिर क्या होता है ? यह भूत सारथी से स्वार्थी बना देते हैं। और आप क्या करते हो ? जब सारथीपन की स्मृति में आते हो तो भूतों को भगाने की युद्ध करते हो। युद्ध की स्थिति को योगयुक्त-स्थिति नहीं कहेंगे।

इसलिए योगयुक्त वा युक्तियुक्त मंजिल के समीप जाने की बजाय रुक जाते हो और पहला नंबर स्थिति से दूसरे नंबर में आ जाते हो। सारथी आर्थात् वश होने वाले नहीं लेकिन वश कर चलाने वाले।

तो आप सब कौन हो? सारथी हो ना! सारथी अर्थात् आत्मा-अभिमानी। क्योंकि आत्मा ही सारथी है। ब्रह्मा बाप ने इस विधि से नंबरवन की सिद्धि प्राप्त की। इसलिए बाप भी इस का सारथी बना। सारथी बनने का यादगार बाप ने करके दिखाया। फॉलो फॉदर करो। सारथी बन सदा सारथी-जीवन में अति न्यारी और प्यारी स्थिति का अनुभव कराया। क्योंकि देह को अधीन कर बाप प्रवेश होते अर्थात् सारथी बनते हैं देह के अधीन नहीं बनते। इसलिए न्यारा और प्यारा है। ऐसे ही आप सभी ब्राह्मण आत्माएं भी बाप समान सारथी की स्थिति में रहो। चलते-फरते यह चेक करो कि मैं सारथी अर्थात् सर्व को चलाने वाली न्यारी और प्यारी स्थिति में स्थित हूँ। बीच-बीच में यह चेक करो। ऐसे नहीं कि सारा दिन बीत जाए फिर रात को चेक करो। सारा दिन बीत गया तो बीता हुआ समय सदा के लए कमाई से गया। इस-लिए गँवा करके होश में नहीं आना। यह स्वत: नैचुरल संस्कार बनाओ। कौनसा? चेकिंग का।

जैसे किसी के कोई पुराने संस्कार इस ब्राह्मण-जीवन में अभी भी आगे बढ़ने में विघ्न रुप बन जाते हैं तो कहते हो ना कि न चाहते भी संस्कारों के वश हो जाते हैं। जो नहीं करना चाहते हो वह कर लेते

हो। जब उल्टे संस्कार न चाहते कोई भी कर्म करा लेते हैं तो यह नैचुरल चेकिंग का शुद्ध संस्कार अपना नहीं सकते हो ? बिना मेहनत के चेकिंग के शुद्ध संस्कार स्वत: ही कार्य कराते रहेंगे। यह नहीं कहेंगे कि भूल जाते हैं या बहुत बिजी रहते हैं। अशुद्ध अथवा व्यर्थ संस्कार हैं। कई बच्चों में अशुद्ध संस्कार नहीं तो व्यर्थ संस्कार भी हैं। यह अशुद्ध, व्यर्थ संस्कार भुलाते भी नहीं भूल सकते हो और यही कहते हो कि मेरा भाव नहीं था लेकिन मेरा यह पुराना स्वभाव है वा संस्कार है। तो अशुद्ध नहीं भूलता फिर शुद्ध संस्कार कैसे भूल जाता है ?

तो सारथीपन की स्थिति स्वत: ही स्वउन्नति के शुद्ध संस्कार इमर्ज करती है और नैचुरल समय प्रमाण सहज चेकिंग होती रहेगी। अशुद्ध आदत से मजबूर हो जाते हो और इस आदत से मजबूत हो जायेंगे। तो सुना सदा योगयुक्त-युक्तियुक्त रहने की विधि क्या हुई ? सारथी बन चलना। सारथी स्वत: ही साक्षी हो कुछ भी करेंगे, देखेंगे, सुनेंगे। साक्षी बन देखने, सोचने, करने सब में सब-कुछ करते भी निर्लेप रहेंगे अर्थात् माया के लेप से न्यारे रहेंगे। तो पाठ पक्का किया ना। ब्रह्मा बाप को फॉलो करने वाले हो ना। ब्रह्मा बाप

से बहुत प्यार है ना। प्यार की निशानी है ‘‘समान बनना’’ अर्थात् फॉलो करना।